

बालशिक्षा ॥

पहिला हिस्सा

सरल और मनोरञ्जन कहानियों का संग्रह
जिसको

श्रीमद्विद्यासम्पन्न श्री ५ श्रीयुत जान सी नेस्फील्ड साहब
बहादुर अवधदेशीय पाठशालाओं के मुख्य इन्स्पेक्टर
की आज्ञानुसार मुंशी अम्बिकाप्रसाद साहब जिला
लखनऊ के डिपुटी इन्स्पेक्टर ने

हिन्दी शिक्षावली को प्रचलित हिन्दोस्तानी
भाषा में शोधकर लिखा

अवधदेश के निजप्रबन्ध पाठशालाओं के लिये

—:०:—

इकतालीसवीं बार

लखनऊ

केसरीदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर प्रेस में छपकर प्रकाशित.

सन् १९१६ ई०

कापीराइट महफूज है बहक सरिश्तै तालीम अवध

भूमिका ।

आज कल बड़े बड़े बुद्धिमान् और विद्वान् लोगों की यह सम्मति है कि सब प्रकार की पुस्तकें—विशेषकरके सरिश्तै तालीम की पुस्तकें—ऐसी भाषा में लिखी जायँ जिसको हिन्दोस्तानी कहते हैं, अर्थात् उर्दू वा हिन्दी अक्षरों में जहाँ तक हो सके एक ही शब्द लिखे जायँ । वे शब्द चाहे संस्कृत वा हिन्दी के हों चाहे अरबी फ़ारसी के, परन्तु ऐसे हों जो बहुधा बोलचाल में आते हों और जिनको प्रायः सब लोग समझ सकते हों । इसका विचार न रखवा जाय कि हिन्दी लिखावट में फ़ारसी वा अरबी के शब्द न आवें और उर्दू लिखावट में हिन्दी वा संस्कृत के, जिस विद्वान् की आज्ञानुसार यह पुस्तक शोध गई उसकी भी ऐसी ही अनुमति है, इसी से जान बूझकर इस पुस्तक में फ़ारसी और ब्रजभाषा वा अरबी और संस्कृत के शब्द मिलाकर लिखे गये हैं जिसमें किसी को इसके अर्थ समझने में विशेष कठिनता न पड़े ।

बालशिक्षा पहिला हिस्सा का सूचीपत्र ॥

संक्र	विषय	पृष्ठ
१	सफाई	५
२	कहानी	५
३	सिकन्दर का हाल	६
४	उस्ताद का अदब	६
५	सूर्य का बयान	७
६	पद्य	७
७	बरगद का पेड़	८
८	औलाद का हक	८
९	मूर्खता का वर्णन	९
१०	राजा विक्रमाजीत का हाल	९
११	कुबड़े बुढ़े का बयान	९
१२	जमीन का वर्णन	१०
१३	आजाद फकीर	१०
१४	लोहे का बयान	११
१५	भूल	११
१६	अहमक का लतफा	१२
१७	शाहजहाँ बादशाह देहली का बयान	१२
१८	बदख्त का हाल	१३
१९	मोती का बयान	१४
२०	पानी का बयान	१४
२१	माता पिता की प्रीति	१५
२२	अकबर बादशाह का वर्णन	१६
२३	लकड़हारे और मौत की मुलाकात	१६
२४	जामअमसजिद	१७
२५	स्वप्न	१७
२६	कागज	१८
२७	लालच	१८

सबक	विषय	पृष्ठ
२८	आसफुद्दौलह का हाल	१६
२९	मच्छर और मधुमक्खी	१६
३०	जुगराफियः अवध	२०
३१	तीन दुर्बुद्धियों का हाल	२१
३२	हैल मछली	२१
३३	नाइत्तिफाकी	२२
३४	कहानी	२२
३५	सआदत अलीखाँ	२३
३६	माली की हाज़िरजवाबी	२३
३७	अवध के जिले	२४
३८	मुल्क अवध के शहर और कसबे	२५
३९	चीन की दीवार	२७
४०	सब्र	२८
४१	कहानी	२८
४२	वायु का वर्णन	२९
४३	गाज़िउद्दीनहैदर	३१
४४	मौनता अर्थात् चुप रहने का फल	३१
४५	मुहम्मदअलीशाह	३२
४६	हाथी की बुद्धिमानी	३३
४७	ईमानदारी	३३
४८	हिन्दुओं का पुराना हाल	३४
४९	भेड़िया और कुत्ता	३५
५०	फरेब	३६
५१	विद्या का गुण	३७
५२	मूर्खता का फल	३८
५३	समय की प्रशंसा	३८

बालशिक्षा

पहिला हिस्सा ।

पहिला पाठ ।

सफाई ।

हर एक लड़के को चाहिये कि सुबह उठके हाथ मुँह धोया करे और साफ कपड़े चाहे वे मोटे हों या महीन, पहिन कर पढ़ने को जाया करे । सफाई से रहना बहुत अच्छी बात है, जिस आदमी के जी में सफाई होती है उसका सब आदर करते हैं और बीमारियों से भी वह बचता है । जब कोई लड़का साफ कपड़े पहिन कर गुरु के पास जाता है तो वह उसे अपने पास अच्छी जगह बिठाता है और दिल लगाके उसे पढ़ाता है; किन्तु जो लड़के मैले रहते हैं उनको कोई अपने पास नहीं बैठने देता और हर जगह उनका अनादर होता है ।

दूसरा पाठ ।

कहानी ।

एक गरीब का लड़का हाथ मुँह धोकर और बहुत साफ कपड़े पहिन कर मदरसे में रोज़ जाया करता था । मुदरिस उसको ऐसा साफ देखकर उस पर बहुत मेहरबानी करता था और अच्छीतरह

६

बालशिक्षा ।

पढ़ाता और अपने पास बिठाता था, इसलिये उस लड़के ने थोड़े ही दिनों में अच्छी तरह लिखना पढ़ना सीख लिया । फिर उसके उस्ताद ने खुश होकर उसको अपना नायब मुकर्रर किया । देखो, सफ़ाई और मेहनत का क्या जल्दी उसने फल पाया ।

तीसरा पाठ ।

सिकन्दर का हाल ।

सिकन्दर बादशाह, जिसका नाम तमाम दुनिया में प्रसिद्ध है, बड़ा बुद्धिमान और बहादुर था । उसने फ़ारस का मुल्क जीतकर हिन्दोस्तान पर चढ़ाई की और पंजाबमें कई लड़ाइयाँ हिन्दू राजाओं से जीतीं । जब उसने सतलज नदी पार करके आगे बढ़ना चाहा तो उसकी फ़ौज राजी न हुई और उसका हुक्म न माना, तब लाचार होकर वह अपने मुल्क को लौट गया । वह भी परिडतों का सन्मान करता था और सब से ज़ियादह अपने उस्ताद अरस्तू को मानता था ।

चौथा पाठ ।

उस्ताद का अदब ।

कहावत है कि एक दिन किसी ने सिकन्दर से पूछा कि आप अपने बाप को ज़ियादह मानते हैं या गुरु को । उसने जवाब दिया कि गुरु का दर्जा ज़ियादह जानता हूँ क्योंकि बाप ने तो सिर्फ़ मुझे पाला ही है, पर उस्ताद से तमाम इल्म व अदब पाया जिससे

इस दर्जे को पहुँचा । लड़कों को चाहिये कि मा
और बाप की हमेशा इज्जत करें और जिस आदमी
से विद्या और जिन्दगी दोनों चीजें मिलें उसकी
और भी इज्जत करें ।

पाँचवाँ पाठ ।

सूर्य का बयान ।

सूर्य ज़मीन से बहुत दूर और बहुत बड़ा है ।
उससे हमको गर्मी और रोशनी पहुँचती है । जिस
जगह जितनी सीधी किरणें उसकी पड़ती हैं उतनी
ही गर्मी वहाँ अधिक होती है । देखो सुबह को जब
कि आफ़ताब की किरणें तिरछी होती हैं तब उतनी
गर्मी नहीं होती जितनी दोपहर को जब कि सूर्य शिर
पर होता है और उसकी किरणें सीधी ज़मीन पर
पड़ती हैं । जिस तरह सूर्य से ज़मीन रोशन और
गर्म होती है उसी तरह उससे चाँद को भी रोशनी
और गर्मी पहुँचती है ।

छठा पाठ ।

पद्य ।

निद्रित जीवन सों कहत, रवि यह प्रातःकाल ।
अब उठि करहु प्रयत्न सब, निज निज कर्म सुचाल ॥
अतिश्रम करि काटहु दिवस, प्राप्त होय जेहिं वित्त ।
निशि को ऐहै बहुरि वह, समय शयन सुखचित्त ॥

बालशिक्षा ।

सातवाँ पाठ ।

बरगद का पेड़ ।

बरगद का वृक्ष हिन्दोस्तान में बड़ा अजूबा है इस दरख्त की डालों से जटा जमीन की तरफ लटकती हैं और जब जमीनपर पहुँच जाती हैं तो जम कर जड़ें हो जाती हैं । गुजरात के देश में नर्मदा नदी पर एक बहुत बड़ा पेड़ बरगद का है वह कबीरदास के नाम से मशहूर है । इसलिये उसे कबीरबड़ कहते हैं । उसके दर्शन का एक मेला होता है । हजारों हिन्दू यात्री वहाँ इकट्ठे होते हैं । वह पेड़ इतना बड़ा है कि सात हजार आदमी उसकी छाया में रह सकते हैं ।

आठवाँ पाठ ।

औलाद का हक ।

बाप मा को वाजिब है कि अपने लड़कों को लड़कपन से अच्छी तालीम दें और अदब सिखायें कि जवानी में वे खराब न हों । एक आदमी अपने बुढ़े बाप को मारता था, लोगों ने उसे बुराभला कहा और बोले कि तू बड़ा मूर्ख और नालायक है जो बाप के अदब का हक नहीं अदा कर सकता । उसने जवाब दिया कि उसने मेरा हक अदब सिखाने का कब अदा किया था जो मैं उसका हक अदा करूँ । सच है, लड़कों पर मा बाप की कदर करना सब तरह उचित ही है वे चाहे पण्डित हों चाहे मूर्ख, पर बगैर सिख-

लाये ऐसी बात लड़कों की समझमें आना कठिन है।

नवाँ पाठ ।

मूर्खता का वर्णन ।

पद्य ।

मूर्ख की है दुर्दशा, पृथ्वीतल में जान ।
इन कहँ जग में होत नहिं, सुधन प्रतिष्ठा मान ॥
यह विचारिकै कहँ बुध, सुनहु सकल दै कान ।
जो नर विद्या नहिं पढ़ै, करै बुरे नित काम ॥
हे चित ! जो तू बुद्धिवर, सावधान जो होय ।
तौ मूर्ख संगति तजो, भलो कहै सब कोय ॥

दशवाँ पाठ ।

राजा विक्रमाजीत का हाल ।

राजा विक्रमाजीत, जिनको वीर विक्रमादित्य
भी कहते हैं, उज्जैन में पँवारवंश में पैदा हुये थे ।
संवत् इसी राजा के समय से शुरू हुआ है ।
विद्या की उसने बड़ी कदर की चौदह बड़े नामी
पण्डित उसकी सभा में थे उनमें सबसे ज़ियादह
मशहूर कालिदास कवि था जिसकी शकुन्तलाना-
टक, मेघदूत और रघुवंश आदि किताबें आज तक
प्रसिद्ध हैं । इन किताबों का बहुत देशों की भाषाओं
में तर्जुमा हुआ है ।

ग्यारहवाँ पाठ ।

कुबड़े बुढ़े का बयान ।

एक कमज़ोर राह में चला जाता था । बुढ़ापे से

कमर उसकी झुकी हुई थी । एक जवान ने हँसी से पूछा—“ मियाँ झुके हुये क्या ढूँढ़ते हो ” कहा—
 “बाबा जवानी खो गई है उसे ढूँढ़ता हूँ ” सच है, जो वक्त गुज़र गया फिर हाथ नहीं आता और इसी तरह भूल में उमर गुज़र जाती है और पछतावा बाकी रह जाता है । आदमी को दुनिया की ज़िन्दगी पर भरोसा न करना चाहिये और वह काम करना चाहिये जिससे नेक नामी बाकी रह जाय ।

बारहवाँ पाठ ।

ज़मीन का वर्णन ।

यह ज़मीन देखने में चपटी दिखाई देती है पर अरुल में बेल की तरह गोल है । इसके बीचोबीच में पूर्व और पश्चिम जितने देश हैं उनमें हमेशा सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं, इससे वहाँ बहुत गर्मी रहा करती है और उन देशों से उत्तर दक्षिण की तरफ़ जितने मुल्क जितने ही दूर हैं उतनी ही वहाँ कम गर्मी होती है, यहाँ तक कि जो मुल्क उत्तर और दक्षिण बहुत दूरी पर हैं वहाँ कभी गर्मी नहीं होती है और इतनी सरदी रहती है कि उसी मुल्क के लोग उसे सह सकते हैं ।

तेरहवाँ पाठ ।

आज़ाद फ़कीर ।

एक फ़कीर ने किसी आदमी से सवाल किया कि

मुझे कुछ दे । उसने बहुतसी गालियाँ दीं । वह फक्कीर बोला—“अच्छा बाबा, जैसा दोगे वैसा पाओगे । ”

चौदहवाँ पाठ ।

लोहे का बयान ।

लोहे से अधिक फायदेवाली धातु दुनिया में नहीं है । जो विचार करके देखो तो कोई काम ऐसा नहीं कि बिना लोहे की मदद के हो सके । दुनिया में धन और सब चीजों की शोभा लोहे के सबब से है । जिस मुल्क के लोग लोहे को नहीं जानते वे बहुत गरीब होते हैं—न खेती कर सकते हैं, न कपड़ा वगैरह बना सकते हैं । लोहा खानि से निकलता है और उसमें मिट्टी और पत्थर मिला रहता है । ऐसा लोहा यदि यहाँ के आदमी देखें तो न पहिंचान सकें कि यह लोहा है या पत्थर । परन्तु जब उसको तेज आँच से गलाते हैं तो लोहा साफ़ अलग हो जाता है । हिन्दोस्तान में लोहा बर्दवान, उड़ीसा और कमाऊँ में निकलता है ।

पन्द्रहवाँ पाठ ।

भूल ।

सुस्ती और भूल का फल बुरा है । भूलनेवाले और सुस्त आदमी का हरएक काम खराब होता है । कभी उसको बुद्धि वा ज्ञान नहीं आता और हरएक संगति में उसका निरादर होता है । सुस्ती और भूल से शर्म के सिवा और कुछ नहीं मिलता, जैसा कि इस

कहानी से जाहिर है । एकदिन नदी के किनारे पर एक कछुए और चौगड़े में यह बाजी लगी कि देखें उस टीले तक जो यहाँ से कोसभर है कौन पहिले पहुँचता है । उसी समय दोनों बराबर वहाँसे चले और थोड़ी देर में चौगड़ा कछुए से बहुत आगे निकल गया । चौगड़ा यह सोचकर कि मैं बहुत जल्द दौड़ता हूँ और कछुआ अभी बहुत दूर है जब तक वह यहाँ पहुँचेगा मैं ठिकाने पर पहुँच जाऊँगा, राह में सो रहा; परन्तु कछुआ एक पल भर कहीं नहीं ठहरा—धीरे धीरे बराबर चला गया । आखिर को वह टीले तक पहुँच गया और चौगड़ा सोताही रहा । जब उसकी आँख खुली तो अपनी सुस्ती पर बहुत पछताने लगा और शर्माया ।

सोलहवाँ पाठ ।

अहमक का लतीफ़ा ।

एक अहमक का ऊँट खो गया । उसने शुक किया । लोगों ने पूछा—“भला यह कौन शुककी जगह है ?” कहने लगा—“शुक इसलिये करता हूँ कि मैं उसपर सवार न था, नहीं तो मैं भी खो जाता ।”

सत्रहवाँ पाठ ।

देहली के बादशाह शाहजहाँ का बयान ।

दिल्ली को शाहजहाँ बादशाह ने यमुना के किनारे पर बसाया । शहरपनाह की दीवार करीब ७ मील

के हैं । मुसल्मान बादशाहों के समय में यह नगर बहुत दिन तक सारे हिन्दोस्तान की राजधानी रहा । मुगलों के बंश से सिराजुद्दीन अबूजफ़र यहाँ के पिछले बादशाह थे । उनको लाख रुपये महीना पेंशन सरकार अँगरेजी से मिलते थे । सिर्फ़ क़िले के अन्दर उनका बन्दोबस्त रहता था, मगर सन् १८५७ ईसवी में बलवे के सबब से वे रंगून भेजे गये और वहीं मरे । अब सारे नगर में सरकार अँगरेजी की हुकूमत है ।

अठारहवाँ पाठ ।

बदख़त का हाल ।

पद्य ।

यक लेखक सो कोउ जन, कही बात यह जाय ।
 एक पत्र लिखि देहु म्वहिं, मम स्वारथ बनि जाय ॥
 शीत साँस यक खींचि वह, बोला तबहिं तुरन्त ।
 पाँयन मेरे पीर अति, होत अहहि बुधिमन्त ॥
 यासों मैं नहिं लिखि सकत, मीत तुम्हारे पत्र ।
 और कतहुँ तुम जाय अब, ढूँढ़हु अर्थ विचित्र ॥
 बोला सो जन आपको, वृथा कहों अनुबन्ध ।
 कहहु पत्र अरु पाँव सों, कौन होय सम्बन्ध ॥
 लेखक बोल्यो सुनहु भो, क्रोध दूरि करि देहु ।
 मैं तुम सों जो कहहुँ अब, त्यहिको चित धरिलेहु ॥
 कारण यह मैं लिखत अस, पढ़ै न पावत कोय ।
 काहू कहँ जब कछु लिख्यो, ताकी अस गति होय ॥
 उसके पढ़ने के लिये, परत आय जब काम ।
 मोहीं कहँ जाना पड़त, केहू विधि वह ठाम ॥

हिन्दोस्तान में लङ्का के किनारे समुद्र से मोती निकाले जाते हैं । ज्येष्ठ बैशाख में बुढ़वे वा मर-जिया उनको निकालते हैं । मोती सीप में पैदा होता है । अक्सर मुल्कों के सौदागर उन दिनों में वहाँ मोती खरीदने को इकट्ठे होते हैं और दो महीने तक बड़ा मेला रहता है । मकान उस टापू में बाँस के बनते हैं और नारियल के पत्तों से ढाये जाते हैं । फारस मुल्क के किनारे आरमुज में भी मोती निकलते हैं, लेकिन वहाँ का बादशाह उनकी सौदागरी का कुछ बन्दोबस्त नहीं करता ।

पानी जीने का एक सबब है । गल्ला फल फूल वगैरह पानी से पैदा होते हैं । परन्तु जानना चाहिये कि पानी जब खराब होता है तो उसमें जहर के बराबर गुण हो जाता है । जो उस पानी को पीवे, भूट बीमार हो जाय । पानी की खराबी का कारण यह है कि जब उसमें घास फूस या पेड़ के पत्ते गिरकर सड़ जाते हैं तो वह पानी खराब और मैला हो जाता है । उसका असर जहाँ तक हवा में फैलता है हैजा वगैरह बीमारी पैदा करता

है । कुओं में भी यही दोष आ जाता है । इस कारण पानी की खबरदारी जरूर है । कुओं में कूड़ा या पत्ते वगैरह न गिरने पावें और ऊपर भी उनके चारों ओर सफाई रहे । जहाँ कहीं अच्छा पानी न मिले तो पानी को औटाकर पीवे और जो यह भी न बन पड़े तो छान के पीने से भी बहुत फायदा है ।

इक्कीसवाँ पाठ ।

माता पिता की प्रीति ।

किसी समय एक गाँव में आग लगी । सब लोग अपना अपना माल व असबाब लेकर भागे । उस गाँव में दो भाई बड़े मालदार रहते थे । वह भी अपना माल व असबाब बाँधकर भागने के विचार में थे कि आग उनके मकान के पास पहुँच गई । वह असबाब लेके भागने ही चाहते थे कि इसमें उनकी आँख अपने बुढ़े मा बाप पर पड़ी कि वह मकान के एक कोने में पड़े हैं । यह हाल देखके एक भाई ने दूसरे से कहा कि “ माल और असबाब तो हमको फिर मिल जायगा, पर मा बाप फिर न मिलेंगे । ” यह कहके उन्होंने असबाब फेंक दिया और एक ने मा को और दूसरे ने बाप को अपने कंधों पर उठा लिया और उस आग से बाहर ले निकले ।

बाईसवाँ पाठ ।

अकबर बादशाह का वर्णन ।

अकबर हिन्दोस्तान के मुसल्मान बादशाहों में बहुत नेक और मुन्सिफ़ था । बहुधा रात भर वह नहीं सोता और विद्या की चर्चा रखता था । मेहनती भी ऐसा ही था कि अजमेर से आगरे तक एक सौ दस कोस बराबर दो दिन में घोड़े पर चला गया । अक्सर कानून की किताबें भी उसने बनाई, उनमें से आईन अकबरी बहुत मशहूर है । राजा विक्रमाजीत की तरह उसके दरबार में भी बड़े बड़े अकलमन्द लोग इकट्ठा थे । उनमें से राजा जयसिंह बहादुरी में, वीरबल बहादुरी और दिल्लगी में, फ़ैज़ी और अबुल्फ़ज़ल इल्म व हिकमत में, मीर खुसरो शास्त्री में बहुत प्रसिद्ध थे ।

तेईसवाँ पाठ ।

लकड़हारे और मौतकी मुलाकात ।

एक मजदूर धूप में लकड़ी का गट्टा लिये जाता था । चलते चलते बोभे के मारे थक गया और दुःख से घबरा के शिर से गट्टे को फेंक के कहने लगा कि जो इस जीने से मौत आ जाती तो अच्छा था । उसी क्षण मौत आदमी का रूप बनके सामने आ खड़ी हुई और कहने लगी—“तूने मुझे क्यों बुलाया है?” मौत को देखते ही मजदूर घबराया

और जवाब दिया कि मैंने आपको इतने ही के वास्ते बुलाया है कि कृपा करके यह गढ़ा उठा दीजिये ।

चौबीसवाँ पाठ ।

जामअ मसजिद ।

दिल्ली शहर में बड़ी मशहूर इमारत जामअ मसजिद है । यह शाहजहाँ बादशाह के समय में तैयार हुई और दस लाख रुपया उसमें खर्च हुये । इसके बीच में संगमरमर का एक हौज है और दोनों ओर इस मसजिद के दो मीनार हैं जिनकी ऊँचाई एक सौ फीट है । तमाम मसजिद की लम्बाई दो सौ सोलह फीट है । भीतर का फर्श संगमरमर और संगमूसा का बना है । मीनारों के ऊपर जाने के लिये एक सौ तीस पेंचदार सिङ्ढियाँ लाल पत्थर की बनी हैं । सरकार अँगरेजी ने इस मसजिद के खर्च के वास्ते एक वसीका बाँध दिया है । यह मसजिद सारे संसार की मसजिदों से सुन्दर समझी जाती है ।

पच्चीसवाँ पाठ ।

स्वप्न ।

पद्य ।

सोवत में काहू यह देखा । यक शैतान कियो अतिबेखा ॥
अय फिट्टेश बुरे गुणवाला । मुझको क्यों तैं कियो बेहाला ॥
क्रोध कियो औ दियो तमाचा । पुनि करसों पकड़े मुखकाँचा ॥
औ फिर दियो तमाचा कड़का । तब आँखें खुल गईं बेधड़का ॥

जब देखी दाढ़ी निज हाथा । मन मलीन भो लज्जित गाता ॥

छब्बीसवाँ पाठ ।

कागज ।

जब तक कागज नहीं बना था लोग भोजपत्र और ताड़ के पत्तोंपर लिखते थे । पहिले पहिल रुई का कागज चीनवाले बनाने लगे । उनसे अरब के लोगों ने सीखा । उसके पीछे अंगरेजों ने कागज बनाना जाना । वलायत में बहुत अच्छा कागज महीन कपड़ों के चीथड़ों से बनाया जाता है और मोटा कागज टाट से । इस देश में बहुधा कागज रुई वा टाट पानी में गला के बनाते हैं । हिन्दोस्तान के अगले राजाओं के समय में सनदें ताँबे या पीतल के पत्रोंपर खोदी जाती थीं और इंगलिस्तान में आज कल बड़ी बड़ी सनदें ऐसे कागज पर लिखते हैं जो चमड़े से बना है । यह कागज बहुत मजबूत होता है, पाँच छःसौ वर्ष तक रहता है ।

सत्ताईसवाँ पाठ ।

लालच ।

किसी लालची की मुर्गी रोज़ एक सोने का अण्डा देती थी । उसने समझा कि ऐसे तो धन बहुत दिनों में इकट्ठा होगा जो इसका पेट फाड़के सब अण्डे एकही बार निकाल लूँ तो जल्द अमीर हो जाऊँ । इस लालच से उसने मुर्गी का पेट फाड़कर उसको मार डाला परन्तु पछतावेके सिवाय उसके कुछ हाथ न लगा । देखो, लालच

ने उसको ऐसा अन्धा किया कि बहुत सा धन तो किनारे रहा जो रोज मिलता था उसको भी उसने खो दिया।

अट्ठाईसवाँ पाठ ।

आसफुद्दौलह का हाल ।

नवाब आसफुद्दौलह शाह देहली के वजीर और सूबेदार कहलाते थे । उनसे पहिले अवध का हाकिम फ़ैजाबाद में रहता था परन्तु आसफुद्दौलह लखनऊ में रहने लगे और उसे खूब बसाया । एक बहुत अच्छी इमारत जिसे बड़ा इमामवाड़ा कहते हैं वहाँ बनाई । वह मकान रैयत के पालने के लिये उन दिनों में बनाया गया था कि जब बहुत बड़ा अकाल पड़ा था । सिवा उसके एक नहर करबला में उन्होंने बनवाई, उसको नहर आसफ़ी कहते हैं । गुणी लोगों का उन्होंने बड़ा सत्कार किया और बहुत रुपया खर्च करके एक कुतुबख़ाना भी इकट्ठा किया । उनके समय में जनरल मारटीन साहब ने भी अच्छे अच्छे मकान लखनऊ में बनवाये ।

उन्तीसवाँ पाठ ।

मच्छर और मधुमक्खी ।

जाड़े के दिनों में एक मच्छर भूख से तंग आके मधुमक्खियों के पास गया और उनसे कहा कि जो तुम थोड़ा शहद हमको दो तो हम तुम्हारे लड़कों को गाना सिखायें । मक्खियों ने कहा कि

आप कृपा कीजिये, हम अपने लड़कों को मेहनत करना सिखावेंगी जिसमें हमारी तरह शहद इकट्ठा करें जो समय पड़ेपर उनके काम आवे । गाना जानने से तुम्हींको क्या लाभ हुआ कि जो हम अपने बालकों को सिखायें । जैसे तुम भीख माँगते हो वैसे ही वे भी मुहताज रहेंगे । आदमी को चाहिये कि अपनी सन्तान को वह चीज सिखाये जिससे उसको बहुत फायदा हो । बेकाम की चीज सिखाना मानो उनके साथ बैर करना है ।

तीसवाँ पाठ ।

जुग्राफिया अवध ।

सूबा अवध नैपाल और गंगा के बीच में है । इस देश में चौबीस हजार वर्गात्मक मील धरती है और एक करोड़ चौदह लाख सात हजार छः सौ पच्चीस के करीब आदमी हैं । ब्राह्मणों की बस्ती इसमें बहुत है । राजपूत उनसे कम हैं । पहिले इस मुल्क का हाकिम फ़ैजाबाद में रहता था जिसके पास अयोध्या तीर्थस्थान है, जहाँ राजा रामचन्द्र पैदा हुये थे । अब हाकिम यहाँ का लखनऊ में रहता है । इस देश की प्रसिद्ध नदियाँ ये हैं—घाघरा या सरयू, गोमती, सई, टेढ़ी और कल्याणी आदि । धरती इस सूबे की बराबर है । कोई पहाड़ नहीं है । यह मुल्क बहुत हरा भरा है । यहाँ अनाज सब प्रकार का उपजता है और

और देशों को भेजा जाता है। रुई बहुत नहीं पैदा होती।
परन्तु यमुना के नजदीक के मुल्कों से बहुत आती है।

इकतीसवाँ पाठ ।

तीन दुर्बुद्धियों का हाल ।

पद्य ।

मूरख तीन मनुज एक बार । चले जात कछु करत विचार ॥
अतिविचित्र मन्दिर तेहि ठाई । निरखि एक जड़ कहत ठिठाई ॥
तब के राज रहे अस भारी । जो पृथ्वी से सदन सँवारी ॥

दोहा ।

कहत दूसरो बचन अस, सुनु निलज्ज यह बात ।

यह पहिले रचि धरणि पर, पुनि उठाय यह ज्ञात ॥

सवैया ।

यह देखि करें आश्चर्य सबै त्यहि औसर तीसर बात कही ।
यह कूप अनूपम मान कही सब लोगन उलटि दियो जबहीं ॥
मीनार भयो तब नाम इसे जड़ आदत ऐसी अहै जो मही ।
जड़ आपन परिडत मानतहीं निज ऐब को ध्यान करै हैं नहीं ॥

बत्तीसवाँ पाठ ।

हैल मछली ।

हैल मछली बहुत बड़ी अर्थात् तीस हाथ लम्बी
और इतनी ही चौड़ी होती है। पूँछ उसकी आठ गज
चौड़ी और मुँह उसका चौदह हाथ लम्बा होता है।
उसको समुद्र में रहने से लोग कहने को तो मछली
कहते हैं मगर वह मछली की नाई अण्डे नहीं देती,
बल्कि बच्चे जनती है। आदमी उसका शिकार करते

हैं और उसकी चरबी की बत्ती बनाते हैं । इन बत्तियों की रोशनी साफ होती है और ये दूर दूर के देशों में काम में लाई जाती हैं । यह मछली बहुधा शीत देशों के पास समुद्र में रहती है और कभी कभी गर्म मुल्कों के नजदीक भी पाई जाती है ।

तेत्तीसवाँ पाठ ।

नाइत्तिफाक्री ।

फूट संसार में एक ऐसा अपराध है कि इससे बड़े बड़े घर नाश हो जाते हैं, राज्य बिगड़ जाते हैं, बैरी बड़े बलवान् हो जाते हैं । आदमी को चाहिये कि दुश्मन और मतलबी की बात पर न चले और अकलमन्द की नसीहत को गाँठ में बाँधे और उसपर चले और जहाँ तक हो सके फूट से बचा रहे । हिन्दोस्तान नाइत्तिफाक्री के सबब से हमेशा गैर कौमों के बश में रहा है ।

चौत्तीसवाँ पाठ ।

कहानी ।

एक राजाने मरते समय अपने लड़कों को बुलाके एक मजबूत रस्सी उनको दी और कहा कि सब मिल के इसे तोड़ो । सभी ने मिलके जोर किया परन्तु वह न टूटी । उसने रस्सी को खोल डाला और एक एक लड़के हर एक लड़के को दी और कहा कि अब तो इसे तोड़ो । सबने सहज में अपनी अपनी लड़के को तोड़

डाला। उस वक्त बादशाह ने कहा कि देखो इसी तरह जब तक आपस में मिले रहोगे तब तक तुमको कोई न तोड़ सकेगा और जो फूट पड़ जायगी तो ज़रा से भिटके में जैसे यह लड़ टूट गई है वैसे ही टूट जाओगे।

पैंतीसवाँ पाठ ।

सआदतअलीखाँ ।

आसफुद्दौला के कोई औलाद न थी, इसीसे उनके भाई सआदतअलीखाँ को अँगरेजों ने बनारस से बुलाकर लखनऊ का नव्वाब बनाया। यह बुद्धिमान् थे परन्तु लालची बहुत थे। खर्च बेकाम उनके समय में नहीं हुआ और बाईस करोड़ रुपया के लगभग उन्होंने खजाने में इकट्ठा किया था। कैसरबाग के पास लखनऊ में उनकी कबर बनी है। यह नव्वाब ही कहलाते थे, बादशाह की पदवी उस समय तक न थी।

छत्तीसवाँ पाठ ।

माली की हाज़िरजवाबी ।

एक आदमी ने माली से पूछा कि “तूने छोटे पेड़ों को रस्सी से क्यों खींचकर बाँधा है ?” उसने जवाब दिया कि “बेढंगे न बढ़ जायँ।” सच है, यही दशा आदमियों की है। जो बचपन से सुराह पर न लगाये जायँ और सुचाल के वास्ते अच्छी तरह न दबाये जायँ तो जवानी में अपने मन के होकर बुरे कामों की ओर झुक जाते हैं।

अवध के चार बड़े हिस्से हैं उनमें से हर एक को क्रिस्मत व कमिशनरी कहते हैं । एक एक क्रिस्मत व कमिशनरी में तीन तीन जिले हैं । ब्यौरा उनका यह है—

नाम क्रिस्मत

नाम जिले

लखनऊ	लखनऊ खास,	उन्नाव,	बारहबंकी
रायबरेली	रायबरेली खास,	प्रतापगढ़,	सुल्ताँपुर
फैजाबाद	फैजाबाद खास,	गोंडा,	बहिरायच
सीतापुर	सीतापुर खास,	हरदोई,	खीरी

यहाँ के सबसे बड़े हाकिम को चीफ कमिशनर कहते हैं, जो सबके हाकिम हैं । उनके नीचे एक मददगार हैं जिनको जुडीशल कमिशनर कहते हैं । वे दीवानी व फौजदारी के मुकद्दमे फैसल करते हैं । माल का काम और कुल सूबे का बन्दोबस्त चीफ कमिशनर आप करते हैं । हर एक क्रिस्मत में एक एक कमिशनर रहते हैं जिनके सामने बड़े बड़े मुकद्दमे पेश होते हैं जैसे खून और डकैती वगैरह और उन्हींके सिपुर्द उस देश की आमदनी की जाँच है । उनके नीचे हर एक जिले में एक एक डिपुटी कमिशनर हैं और उनके मददगार असिस्टण्ट कमिशनर, एक्स्ट्रा असिस्टण्ट कमिशनर और तहसीलदार आदि हैं ।

मुदरिसों को चाहिये जिन जिन जगहों के नाम इस पाठ वा दूसरे पाठ में लिखे हैं उन्हें लड़कों को नक्शों में अच्छी तरह दिखलावें और समझावें ।

अड़तीसवाँ पाठ ।

सूबा अवध के शहर और कसबे ।

अवध के सूबा में दो ही बड़े शहर हैं—एक लखनऊ, दूसरा फैजाबाद । लखनऊ गोमती नदी पर बसा है और सबसे बड़ा शहर है । इसमें २५८०००० आदमी बसते हैं । नवाब आसफुद्दौला बहादुर के समय से पहिले यह शहर एक छोटा सा कसबा था, परन्तु नवाब साहब ने जबसे इसको राजधानी बनाया तबसे इस कसबे की बहुत बढ़ती हुई । इसमें अच्छी अच्छी इमारतें हैं । फैजाबाद घाघरा और सरयू नदी पर बसता है । यह शहर अगले वक्त्र में अवध की राजधानी था । मन्सूरअलीखान बहादुर की अमल्दारी से पहिले राजधानी अयोध्या के नाम से मशहूर थी, लेकिन नवाब साहब ने पुरानी अयोध्या के पश्चिम ओर थोड़ी दूर पर यह शहर बसाया और इसका नाम ईरान देश की अपनी जन्मभूमि के नाम से फैजाबाद रक्खा । अब फैजाबाद और अयोध्या एक शहर के दो किनारे हैं जिसमें १६००००+३८०००० आदमी बसते हैं ।

सूबा अवध के दूसरे बड़े बड़े कसबे ये हैं—

जिले लखनऊमें—काकोरी, मलिहाबाद ये दोनों कसबे लखनऊ से पश्चिम और उत्तर हैं ।

जिले बारहबंकी में—बारहबंकी, दरियाबाद, रुदौली ।

ज़िले उन्नाव में—उन्नाव, सफ़ीपुर, पुरवा ।

ज़िले सीतापुर में—सीतापुर, खैराबाद, मिश्रिष ।
मिश्रिष हिन्दुओं के तीर्थयात्रा का स्थान है ।

ज़िले हरदोई में—हरदोई, शाहाबाद, बिलग्राम ।
बिलग्राम बहुत दिनों से विद्या के वास्ते प्रसिद्ध है ।
इस क़सबे के नामी विद्वान् ये थे—मौलाना अबदु-
ल्जलील गुलामअली आज़ाद, मौलाना ओहदुद्दीन
अदीब। सिवा इनके इस ज़िले में दो और शहर हैं—एक
सन्दीला, दूसरा पिहानी जहाँ की तलवार मशहूर है ।

ज़िले खीरी में—खीरी, मुहम्मदी ।

ज़िले फ़ैज़ाबाद में—फ़ैज़ाबाद व टाँडा जो घाघरा
नदी पर बसता है और कपड़ों के वास्ते मशहूर है ।
अकबरपुर में एक क़िल्ल और एक पुल टौंस नदी पर
मौजूद है जो बादशाह अकबर के हुक्म से बनाया
गया था । जलालपुर टौंस नदी पर आबाद है ।

ज़िले गोंडा में—गोंडा टेढ़ी नदी के पास है, बल-
रामपुर रावती नदी पर, करनाल गंज सरयू नदी के
पास, नव्वाबगंज घाघरा नदी पर बसा है ।

बलरामपुर और करनाल गंज और नव्वाबगंज
में नाज का व्योपार बहुत होता है ।

ज़िले बहिरायच में—बहिरायच सरयू नदी के नज़-
दीक है । इस क़सबे में सैयदसालार मसऊद गाज़ी
की क़बर है । यहाँ हर साल एक बहुत बड़ा मेला होता है ।

नानपारा उत्तर की तरफ है और यहाँ के रहने-
वालों को नैपाल की सौदागरी से बहुत लाभ होता है ।

खास कसबे बहिरायच में १६००० आबादी है ।

ज़िले रायबरेली-रायबरेली और सलोन दोनों
सई नदी पर बसते हैं और जायस रायबरेली से
पूर्व तरफ है ।

ज़िले प्रतापगढ़-प्रतापगढ़ सई नदी पर और
मानिकपुर और गोनी गङ्गा पर बसा है ।

ज़िले सुल्ताँपुर और अमोली यह दोनों कसबे
गोमती नदी पर बसे हैं ।

उन्तालीसवाँ पाठ ।

चीन की दीवार ।

चीन के लोगों ने अपने दुश्मनों से बचने के लिये
एक दीवार ऐसी बनाई है कि जिससे उनकी अक्ल-
मन्दी जाहिर होती है । वह दीवार दश हाथ ऊँची और
सात सौ मील लम्बी है और बाज़ जगह इतनी चौड़ी है
कि छः सवार उसपर बराबर चले जायँ । बहुतेरे ऐसे ऐसे
दरिया और पहाड़ बीच में आ पड़े हैं कि जिनमें ऐसी
इमारत का बनाना कठिन है और बड़े तअज्जुब की
बात यह है कि पाँच ही वर्ष में यह दीवार तय्यार हुई ।
इस मुल्क में बैरियों से बचाव के वास्ते दीवार बनी तो
भी उससे कुछ फायदा न हुआ और तातारवालों ने
आकर कहीं कहीं अपना दरखल कर ही लिया । इससे

अच्छी तरह जान पड़ता है कि मुल्क का बचाव कुछ दीवार व किल्ले से नहीं होता बल्कि मुल्क का बचाव ईमानदारी व बहादुरी और विद्या जानने से होता है ।

चालीसवाँ पाठ ।

सत्र ।

संसार में जब कोई दुःख पड़े तो आदमी को सन्तोष करना उचित है और यह ध्यान करना चाहिये कि जब थोड़े दिन में उसको दुःख सहने की आदत हो जायगी तब इतना दुःख जान नहीं पड़ेगा । कभी ऐसा भी होता है कि आदमी थोड़े कष्ट से घबरा के उसे दूर करना चाहता है परन्तु उससे भी बड़ी बड़ी विपत्ति में पड़ता है । मुसीबत दूर करने की तदबीर तो जरूर करनी चाहिये पर ऐसी जल्दी न करे कि विपत्ति और अधिक हो जाय । हर एक काम अच्छी तरह सोच विचार के करना चाहिये ।

इकतालीसवाँ पाठ ।

कहानी ।

एक अमीर अपने आदमी को रोज़ तड़के मुर्गे की आवाज़ पर काम के लिये उठाया करता था । आदमी को उस समय नींद के सबब से उठना बुरा मालूम होता था । वह उस तकलीफ़ के दूर करने की फ़िक्र में रहा करता था । एक दिन एक आदमी ने उसको यह सलाह दी कि तू इस मुर्गे को मार डाल, न वह रहेगा

और न उसकी आवाज़ से सुबह का अन्दाज़ मिलेगा । उसने उस निर्बुद्धि की सलाह से वैसा ही किया । दूसरी रात को उसके मालिक की आधी रात से आँख खुल गई । मुर्ग न था जो रात का अन्दाज़ मिलता, वह समझा कि तड़का हो गया, नौकर को उसी वक्क नींद से उठाके काम पर भेजा । राह में वह आदमी अपनी बेवकूफी से बहुत पछताया ।

पद्य कुण्डलिया ।

ईर्षा करनेहार की क्यों मैं सुनी कुवात ।
पाछितावे जियमें बहुत बुद्धि न दीन्हों साथ ॥
बुद्धि न दीन्हों साथ मुझे शीघ्रता लजायो ।
भले बुरे को ज्ञान प्रथम चित में नहिं आयो ॥
दुःख रोष बेदिली काम हर समय नशावत ।
इनसे रहै सचेत अन्त में सो सुख पावत ॥

बयालीसवाँ पाठ ।

वायु का वर्णन ।

वायु से सब जानदारों की ज़िन्दगी है । पवन के बिना कोई जीव एक क्षण भी नहीं जी सकता, परन्तु साफ़ और ताज़ी ही हवा से तन्दुरुस्ती और ज़िन्दगी बनीरहती है । ख़राब हवा से बीमारी ही नहीं मौत भी हो जाती है । अब जानना चाहिये कि हवा कैसे बिगड़ जाती है । वायु के बिगड़ने के तीन कारण हैं । प्रथम यह कि बार बार श्वास लेने से और यह बात

अच्छी तरह ऐसे जानी जाती है कि यदि कोई जीव शीशे के बरतन में बन्द कर दिया जाय तो उस बरतन में की वायु उस जीव के बार बार श्वास लेने से ऐसी बिगड़ जायगी कि वह मर जायगा । इससे ऐसी जगह में रहने से जहाँ पवन आती जाती न न हो या आदमियों की भीड़ हो वैसाही बिगड़ होगा जैसा ऊपर की मिसाल में कहा गया ।

दूसरे यह कि जहाँ कूड़ा या मैलापन होता है वहाँ की हवा भी बिगड़कर बीमारी पैदा करती है और वही हवा बदन के सूराखों की राह अन्दर जाकर जहर हो जाती है । ऐसी ही बिगड़ी हुई हवा हैजा आदि बीमारियों की जड़ है ।

तीसरे यह कि जहाँ पेड़ों की पत्तियाँ वा घास पानी में सड़ती है वा खुद पानी ही धूप की गरमी से सड़ जाता है वा मैला पानी बहता है वहाँ की हवा भी बिगड़ जाती है । यह इस तरह जाना जाता है कि तराई और तरी की जगह में जानदार अक्सर बीमार रहते हैं । इससे हमको चाहिये कि खराब हवा से बचते रहें, कूड़ा वगैरा इकट्ठा न होने दें, मकानों को कीचड़ पानी और पके हुये अनाज के धोवन से साफ़ रखें, मुहरियों में मैला पानी भरने न पावे । जहाँ तक हो सके मकान में हवा के आने जाने का खयाल रखें ।

तेतालीसवाँ पाठ ।

गाज़िउद्दीन हैदर ।

सआदतअलीखाँ के पीछे उनके बड़े बेटे गाज़ि-
उद्दीन हैदर अवध के मालिक हुये । अँगरेजों की
तरफ़ से उनको बादशाहत का खिताब मिला और
उनके नाम का सिक्का जारी होकर ताज व तख्त
बादशाही उनके लिये तैयार हुआ । यह बादशाह
बहुत शराबी और अपने मुल्क से बेख़बर थे । मश-
हूर है कि यह कुछ भक्ती भी थे । तेरह वर्ष राज्य करके
सन् १८२७ ईसवी में उनका देहान्त हुआ और उनके
पीछे सूबा अवध में जो हाकिम हुआ वह बादशाह
कहलाया । गाज़िउद्दीन हैदर के बाद नसीरुद्दीन हैदर
उनके बेटे ने सन् १८३७ ई० तक राज्य किया ।

चवालीसवाँ पाठ ।

मौनता अर्थात् चुप रहने का फल ।

एक गधे ने कहीं शेरकी खाल पाई । वह उसको
ओढ़ के जङ्गल में फिरने लगा । आदमी व जानवर
दूर से उसे देख के डर के मारे उसके पास नहीं आते
थे और गधा तमाम जङ्गल और खेत चरता फिरता
था । एक दिन यह सोचा कि शायद मेरे न बोलने से
जानवर यह समझें कि यह शेर नहीं है और उनके
जी से डर जाता रहे, इसलिये शेर की बोली बोलनी
चाही । ज्योंही वह शेरकी बोली बना कर बोला, सब

जानवर पहिंचान गये कि यह गधा है और उसके ऊपर आ गिरे और गुस्से के मारे उसे टुकड़े टुकड़े कर डाला ।

पद्य-सवैया ।

चित्त विचारिकै मौन गहै अरु सोई प्रतिष्ठित है जगमाहीं ।
लोभ वृथा मोहादि अनेक सबै दुरि जात लखै कोउ नाहीं ॥
कैसो छिपावतहै इनको जिमि क्रोध को देखिकै धर्म पराहीं ।
और कहाँलों बखान करौं गुण ऐसे अनेक गिने नहिं जाहीं ॥

पैंतालीसवाँ पाठ ।

मुहम्मदअलीशाह ।

नसीरुद्दीन हैदर के मरने पर मुहम्मदअली शाह उनके चचा गद्दीपर बैठे और वे पाँच वर्ष राज्य करके सन् १८४२ ई० में मर गये उसके बाद अमजदअली शाह उनकी गद्दी पर बैठे। उन्होंने भी पाँच वर्ष राज्य किया सन् १८४७ ई० में वाजिदअलीशाह अमजदअलीशाह के बेटे तख्तपर बैठे। परन्तु उन्होंने राज्य काजमें कुछ ध्यान न दिया, भोगविलासमें पड़ गये। अन्तमें इस बे बन्दोबस्ती और खराबी के सबबसे सन् १८५६ ई० में मुल्क उनके हाथ से निकल गया और वह कलकत्ते को चले गये। वहाँ से वह लाख रुपया महीना पेन्शन पाते रहे और सन् १८८७ ई० में उनका वैकुण्ठवास होगया। सन् १८५६ ई० से अँगरेज लोग इस मुल्कमें राज्य करते हैं।

बियालीसवाँ पाठ ।

हाथी की बुद्धिमानी ।

हाथी बड़ा बुद्धिमान् होता है और बहुधा विचित्र काम करता है । नीचे लिखी हुई कहानी से उस की अक्लमन्दी जाहिर होती है । सूरत नगर में एक हाथी सड़क पर चला जाता था । जब एक दरजी की दूकान के पास पहुँचा तो उसने अपनी सूँड़ दूकान के अन्दर बढ़ाई । उस समय वहाँ बहुत से दरजी बैठे कपड़े सीते थे । किसीने एक सुई उसकी सूँड़ में चुभो दी । हाथी उस वक्क तो चुपका चला गया । पर जब वहाँ से फिरा तो कहीं से मैलापानी अपनी सूँड़ में भर लाया और उस दरजी की दूकानपर पहुँच के वह मैला पानी इस तरह से छिड़क दिया कि जो कपड़े वे लोग सी रहे थे सब खराब हो गये और वे दरजी बहुत पछिताये और लजाये ।

सैंतालीसवाँ पाठ ।

ईमानदारी ।

एक ईमानदार गरीब का लड़का किसी अमीर के पास नौकर था । एक दिन उस अमीर ने उसको दो जोड़े कपड़े इनआम दिये । वह खुश होकर अपने घर लाया । एक तो उसने पहिन लिया और दूसरा उठा रक्खा । जब उसने दूसरा जोड़ा बदला तो अँग-रखे की जेब में एक नोट ५०) रुपये का निकला ।

वह उसको लेकर अमीर के पास गया और कहा कि यह नोट उस अँगरेखे की जेब में भूल से रह गया था, जो हुजूर ने मुझको बख्श दिया था। अमीर उसकी ईमानदारी पर बहुत राजी हुआ और उस वक्त तो उसको रुखसत किया, पर दूसरे दिन जब वह लड़का अपने वक्त पर फिर हाजिर हुआ तब अमीर ने अपने साथियों के सामने उसकी ईमानदारी का सब हाल कहा और एक अँगरेखा उसे और दिया और कहा कि इसकी जेब में सौ रुपये का नोट तू पावेगा। उसे तू अपने खर्च में लाना। देखो, ईमानदारी का फल यह है कि पचास रुपये के बदले उसने सौ रुपये पाये और सबके आगे उसकी बड़ाई हुई।

अड़तालीसवाँ पाठ ।

हिन्दुओं का पुराना हाल ।

हिन्दू अरुल रहनेवाले हिन्दोस्तान के नहीं हैं। यह लोग ईरान की ओर से आके पंजाब देश में और गङ्गा यमुना और घाघरा आदि नदियों के किनारों पर बसे। तिस पीछे बड़े बड़े नगर जैसे दिल्ली, कन्नौज और अयोध्या उन नदियों पर बसाये। बहुत दिनों तक यह लोग उत्तरीय हिन्दोस्तान में रहे। जब उन की बढ़ती हुई तो बिन्ध्याचल पहाड़ और नर्मदा नदी के पार होकर दखन में पहुँचे और उधरके देशों में भी फैले। अरुल बोली उनकी संस्कृत थी। धीरे धीरे

उस भाषासे हिन्दी, मरहटी, बंगाली आदि भाषायें निकलीं जो आजकल सारे हिन्दोस्तान में बोली जाती हैं। परन्तु दखनके बहुतेरे पहाड़ी देशों की भाषा जैसे तामिल और तैलंग संस्कृत से सब तरह अलग हैं ।

उन्नासवाँ पाठ ।

भेड़िया और कुत्ता ।

एक भूखा भेड़िया किसी गाँव के पास आया । संयोग से एक मोटा ताजा कुत्ता उसे देख पड़ा । भेड़िये को उसकी मुट्ठी पर तन्त्रज्जुब हुआ और कुत्ते से पूछने लगा—“क्यों भाई कुत्ते, तुम क्या उपाय करते हो जो ऐसे मोटे बने हो ?” कुत्ते ने जवाब दिया कि “मैं अपने मालिक की ताबेदारी करता हूँ और उस का माल चोरों से बचाता हूँ । उसके पलटे में मालिक की मेहरबानी से तरह तरह के खाने खाता हूँ ।” भेड़िये ने कहा—“ऐ भाई ! जो हो सके तो मैं भी तुम्हारे साथ तुम्हारे मालिक के यहाँ चलूँ और चैन से रहूँ ।” कुत्ता उसे अपने साथ ले चला । इतिफाक से भेड़िये ने देखा कि उसकी गर्दन के चारों ओर एक लकीर बनी है और वहाँ के बाल सब उड़ गये हैं । भेड़िये ने पूछा—“भाई, गर्दन पर क्या है ?” उसने कहा—“कुछ तो नहीं, पट्टे का दाग है ।” यह सुनते ही भेड़िया पिछले पैरों फिरा और बोला—“आप जाइये, मुझको कैद होके मोटा होना मंजूर नहीं ।”

पचासवाँ पाठ ।

फरेब ।

एक नगर से दो आदमी जिनका नाम गाफिल और आक्रिल था, परदेश को निकले । राह में उनको एक तोड़ा रुपयों का मिल गया । वह दोनों खुश होके घर फिरे कि थोड़े दिन तक आराम करें, तब फिर परदेश करेंगे । एक ने कहा कि “यह सब रुपया एकबारगी ले जाना अच्छा नहीं है, ऐसा न हो कि पकड़े जावें।” इस वास्ते थोड़ा रुपया निकालके बाकी एक पेड़ के नीचे गाड़ दिया । मगर आक्रिल छिपकर वह रुपया खोद लाया और ज़मीन को बराबर कर आया । जब गाफिल के पास खर्च न रहा तो आक्रिल से बोला— “चलो और रुपया निकाल लावें ।” जब दोनों ने वहाँ पहुँचकर ज़मीन खोदी तो रुपया न पाया । आक्रिल ने उलटी चोरी गाफिल को लगाई कि तूही रुपया ले गया है । आखिर को दोनों काज़ी के पास गये काज़ी ने आक्रिल से गवाह माँगा । उसने जवाब दिया कि “जिस पेड़ के नीचे रुपया गाड़ा था वही मेरा गवाह है । जो आप वहाँ चलिये तो वह साफ़ हाल कहेगा ।” दूसरे रोज़ काज़ी वहाँ गया और बहुत से लोग इस अजूबा तमाशे के देखने को इकट्ठा हुये । काज़ी के पूछने पर उस पेड़ से आवाज़ आई कि “गाफिल ने रुपया लिया है।” काज़ी यह सुनके हैरान हुआ और समझा

कि दरख्त में कुछ भेद है। हुक्म दिया—“इसके चारों ओर लकड़ी इकट्ठा करके आग लगा दो।” जब ऐसा हुआ, एक आदमी घबरा के उस पेड़ के खोल से बाहर निकल आया। काजी ने पूछा—“तू कौन है?” उसने कहा—“मुझे आकिल ने दरख्त में बिठलाकर सिखला दिया था कि जो कोई पूछे कि रुपया किसने लिया है, तो गाफिल का नाम कह देना।” इस बात पर काजी ने आकिल से रुपया लेकर गाफिल को दिलवा दिया और उसको इस फरेब करने की बड़ी सजा दी।

इक्यावनवाँ पाठ ।

विद्या का गुण ।

एक महाजन के दो लड़के थे। बड़े लड़के को उसने केवल अपने घर का हिसाब किताब सिखाया और छोटे को मदरसे में भेजकर सब प्रकार की विद्या पढ़वाई। जब वह महाजन मर गया तो उसका सब माल उन दोनों लड़कों ने आधा आधा बाँट लिया तो भी मुफ्त खानेवालों ने अपने मतलब के वास्ते उनमें ऐसी फूट डाल दी कि अदालत में नालिश की। जो लड़का सिर्फ हिसाब ही जानता था और अदालत के काम को नहीं जानता था, उसको मुख्तार नौकर रखना पड़ा और बहुत से मुफ्त खानेवाले भी उसके यहाँ घुसे और उन लोगों ने धोखा देकर उसका

रुपया बहुत खर्च कराया और आप भी खूब उड़ाया । परन्तु जो लड़का आप पढ़ा था और कानून भी जानता था और कचेहरी में आप बातचीत कर सकता था उसने आप खूबकारी की और सब कागजात आपही अदालत में पेश किये । थोड़े दिन में बड़े भाई को दुष्ट नौकरों ने लूटकर कंगाल कर दिया और छोटे भाई ने मुकद्दमा भी जीता और खर्च करने पर भी उसके पास बहुत रुपया बच रहा । जिससे उसने फिर रोजगार करके अपना कारखाना वैसाही जमा लिया । इस कहानी से अच्छी तरह जाना जाता है कि धनवान् लोगों को विद्या की बहुत ज़ियादत जरूरत पड़ती है और रुपया होने से बहुत झूठे मित्र और सलाहकार बन जाते हैं जो सिर्फ अपने मतलब के चाहनेवाले होते हैं । उनकी बातों पर विश्वास न करना चाहिये ।

पद्य—कुण्डलिया ।

तुलसी या संसार में मतलब को व्यवहार ।
जब लग पैसा गाँठ है तब लग यार हजार ॥
तब लग यार हजार यार संगहि मिलि डोलैं ।
जब पैसा नहीं गाँठ यार मुखहू नहीं बोलैं ॥
कहैं गिरिधर कविराय जगत का याही लेखा ।
बिन मतलब बिन गरज यार कोइ बिरला देखा ॥

बावनवाँ पाठ ।

मूर्खता का फल ।

एक अमीर के एक ही लड़का था। वह उसे बहुत प्यार करता था। प्रेम के सबब से कभी उस अमीर ने लड़के को लिखने पढ़ने की ताकीद न की। वह यह विचार करता था कि मेरा धन उसकी तमाम उमर को बहुत होगा। यह पढ़के क्या करेगा। जब वह अमीर मरा, लड़के ने मुफ्त का धन पाया और थोड़े ही दिनों में उड़ा दिया। अन्त को महाजनों से उधार लेके खर्च करने लगा। पर जब वह ऋण देन सका तो महाजनों ने नालिश करके उसे कैद कराया। बहुत दिन पीछे कैद से छूटा और थोड़े दिनों तक भीख माँगता रहा। संयोगसे उसी नगर में काल पड़ा। उस वक्त उसको भीख भी न मिली। अन्त को भूख के मारे मर गया।

तिरेपनवाँ पाठ ।

समय की प्रशंसा ।

कवित्व ।

पल एकहु जो ठहरात नहीं गति चित्त तरंगहु ते सरसाई ।
पुखराज औ पन्ना की कौन कहै मणिमाणिकहू न बराबरि पाई ॥
जो हरि मोल के हार गये नर दूसर कौन जो कीमत गाई ।
गुणसागर सोई पदारथ है संसार के काज को जो सुखदाई ॥

दोहा ।

गुप्त होत है पलक में, कोउ न पावत ताहि ।

गुजर गया जो वक्त्र है, सो फिरि आवत नहिं ॥
 कुटिल कुमारग चलत है, पर अकाज सों नेह ।
 विद्यावान भये जगत, पूरब को फल येह ॥
 बालक अरु बेहोश जे, अरु तरुणता समेत ।
 इनहिं दुरावन के लिये, बरणत सुनहु सचेत ॥

कवित्व ।

जब बुद्धि औ ज्ञान हृदय में बसै तबहीं निज धर्म औ
 कर्म विचारो । मद क्रोध औ लोभ मोहादिक जे सब त्यागिकै
 निज परलोक सम्हारो ॥ अनवश्य को वश्य तो होत नहीं
 जस बायु बहै तस पीठिहि फेरो । कबहूँ नहिं चित्त में खेद
 करौ न कभी उसको अपमान के गेरो ॥

चौपाई ।

जो नरसों इसमें बनि आवै । उद्यम करि निज प्राण जियावै ॥
 मित्रनसे लै जीव अधारा । छाँड़ि पदारथ देइ बिकारा ॥
 विद्यापढ़िकै सिद्धिहि सिद्धै । पूरण वय आनन्द में सद्धै ॥

दोहा ।

समय न जावै हाथ सों, सोई करहु उपाउ ।
 करहि खूब दिल जान से, होय जगत में नाँउ ॥
 खान पान में भूलि कै, समय न खोवै आप ।
 श्रम करिकै विद्या पढ़ै, जासों बढ़ै प्रताप ॥

इति ।

दो०—शंशि वसु वसु शंशि ईसवी, तीस जून गुरुवार ॥

शिशुशिक्षा पूरी भई, बुधजन चित हितकार ॥ १ ॥